B.A. 1 Hons (Philosophy)
Paper - II (Metaphysics)

Topic:- Rationalism (बुद्धिवाद)

बुद्धिवाद वह ज्ञान-शास्त्रीय सिद्धांत है, जिसके अनुसार वास्तविक और सत्य ज्ञान की प्राप्ती केवल बुद्धि द्वारा हो सकती है, दूसरा कोई उपाय नहीं है। क्योंकि बुद्धि ही विश्व की यथोचित व्याख्या करती है। यथार्थ ज्ञान सार्वभौम (Universal) और अनिवार्य होता है सार्वभौम होने का अर्थ है कि वह सभी देश (Space) और काल (time) के पदार्थों के विषय में सत्य होगा। उसकी सत्यता किसी भी देश एवं काल में सीमित नहीं रहेगी। अनिवार्य वह है जिसकी सत्यता को झुठलाया न जा सके, उसका विपरीत नहीं है। जैसे:- २+२=४, यह बुद्धिवाद के सार्वभौम एवं अनिवार्य उदाहरण का सुंदर रूप है। यह धारणा ऐसा ही बना रहता है।

बुद्धिवाद के जनक फ्रांस के महान दार्शनिक रेने डेकार्ट है। उनके अनुसार जन्म से ही मस्तिष्क में कुछ आधारभूत प्रत्यय होते हैं, जो ईश्वर ने हमारे मन पर अंकित किया है ये जन्मजात प्रत्यय (Innate Ideas) में ही अनन्तता, अनश्वरता, पूर्णता का ज्ञान होता है। जन्म के साथ ही बुद्धि का विकास हो चुका रहता है, अगर ऐसा नहीं होता तो एक अबोध बालक किस तरह अपनी भूख का ज्ञान होकर अपने माता-पिता को दर्शाता है। अतः बुद्धि जन्मजात होती है आप अलग से कुछ नहीं सिखते। इन्द्रियाँ

ज्ञान प्रायः हमें धोखा दे जाती है। उनपर भरोसा नहीं किया जा सकता। आत्मा का सार तत्व विचार (Thought) है। अतः बुद्धि हमारे मानसिक जीवन का सार है। बुद्धि अपने आप ज्ञान का विकास करती है। बुद्धि के अंदर जो जन्मजात प्रत्यय हैं, जिनसे गणित की पद्धति द्वारा चिंतन करने पर सत्य और सार्वभौम ज्ञान की प्राप्ती होती है। बुद्धि अपने जन्मजात प्रत्ययों से निगमन निकाल कर दार्शनिक ज्ञान का विकास करती है। आत्मा, ईश्वर द्रव्य, कारण-कार्य नियम आदि का ज्ञान जन्मजात है। इसकी प्रमाणिकता के समस्या के समाधान में डेकार्ड "ईश्वर" की सहायता लेते हैं। अतः जन्मजात ज्ञान स्वयं सिद्ध और पूर्णतः स्पष्ट होता है। इसलिए बौद्धिक ज्ञान की प्रामाणिकता ईश्वर की सत्य प्रियता पर आधारित है।

सहज प्रत्ययों के अलावे डेकार्ड ने दो और प्रत्ययों को स्वीकार है:

1. ब्रह्मार्थ-प्रसूत :- जो बाहरी वस्तुओं से उत्पन्न होते हैं, और मन से स्वतंत्र होते हैं।
2. कलपना प्रसुत :- जो कलपना से उत्पन्न होते हैं। जैसे दुध की नदी, उड़ता हुआ घोड़ा यह पूर्णरूप से हमारे मन पर निर्भर करते हैं। पर इन दोनों में से सहज ज्ञान ही अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे असंदेहरहित, सर्वदा सत्य एवं पूर्णतः स्पष्ट होते हैं। सहज प्रत्ययों को सार्वाधिक महत्व देने के कारण डेकार्ड महोदय की गणना बुद्धिवाद के प्रमुख संस्थापकों में होती है।

स्पिनोजा भी बुद्धिवाद के समर्थक हैं उनका मानना है कि विचार और विस्तार, चेतन और जड़ दोनों एक ही ईश्वर के दो पक्ष हैं, दोनों एक ही ईश्वर में व्याप्त होते हैं। हमारी सीमित बुद्धि उसके विचार-गुण का पर्याप्त है और नैतिक जगत विस्तार का गुण है। इसीलिए बुद्धि और बाह्य जगत में इसका संवादित (Correspondence) होना स्वाभाविक है। इसीलिए बौद्धिकता विश्व के अनुरूप है। --- एक ही ईश्वर के दोनों पर्याय हैं। स्पिनोजा का ये मत समानान्तरवाद कहलाता है। लाइबनीज भी सत्य ज्ञान के प्राप्ती के लिए केवल बुद्धि को मानता है। ज्ञान के मूल आधार जन्मजात प्रत्यय हैं। उनके अनुसार मूल तत्व चिद्बिन्दु ---- (Monads) हैं जो आध्यात्मिक और windowless हैं। इसमें बाहरी वस्तु को प्रवेश देने या देने का कोई मार्ग नहीं है।

हेगल के अनुसार मूल तत्व एक सर्वव्यापक बुद्धि है और उसी का प्रकाश हमारी बुद्धि में है। इसीलिए वास्तविकता ही बौद्धिक (Real is rational) है। अतः उसका ज्ञान बुद्धि द्वारा ही हो सकता है।

बुद्धिवाद की आलोचना :-

1) बुद्धिवाद अतिशय में आकर केवल बुद्धि को ज्ञान का स्रोत मान लिये हैं, और बाकी सिद्धांत के महत्व को नकार देते हैं।

2. ज्ञान सदैव आगे बढ़ता ही रहता है। प्रगति के साथ ज्ञान की वृद्धि होती है क्योंकि जो कभी सत्य समझा जाता है, वह आगे जाकर असत्य सिद्ध हो जाता है।

3. बुद्धिवाद इन्द्रीय ज्ञान को असत्य मानता है। परन्तु आधुनिक मनोविज्ञान बतलाता है कि सभी तरह के ज्ञान का आधार इन्द्रियानुभूति है। प्रत्यक्षीकरण, कल्पना, स्मृति, चिंतन सभी मानसिक क्रिया के मूल में संवेदना रहता है। इसलिए यह कहना कि बुद्धि बिलकुल स्वतंत्र है सत्य नहीं है।

20.4.2020